भूमिका

आधुनिक हिन्दी साहित्य के लेखिकाओं में नासिरा शर्मा का शीर्षस्थ स्थान है। प्रगतिशील मानव धर्मी लेखिका के रूप में नासिरा शर्मा अपनी पहचान बनाने वाली हिन्दी महिला कथाकारों में अद्वितीय है, इनकी शोहरत राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है। स्वतन्त्रता के बाद अपने कथा साहित्य में सामाजिक जीवन के मूल्यों के बदलते परिवेश का बड़ा ही महत्वपूर्ण चित्रण किया हे। एक मुस्लिम महिला होते हुए भी इन्होंने हिन्दी साहित्य में जो ख्याति प्राप्त की है, वे बड़े ही गौरव की बात है। वे जातिगत भेद–भाव और संकीर्णता से बहुत परे है, जो पूरी तरह मानवता वादी है। वह हर वक्त सजग रह कर हर समस्या की जड़ तक पहुँचना चाहती है, उन्होंने हमेशा नित नये मुद्दों पर खुली चर्चा की है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है इस घिसे हुये वाक्य को भी हम सही परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। खासतौर जब शिद्दत से यह समझने की ललक हो कि क्या वाकई ऐसा है? मुस्लिम समाज की आईनादारी के मामले में राही मासूम रजा, शानी और अब्दुल बिस्मिल्लाह का कोई जोड़ नहीं है। ये तीनों ही मुस्लिम जीवन के भीतर मौजूद विडंबनाओं की अनेक परतों को जितनी बेरहमी से उधेड़ते हैं वह इस मायने में बेमिसाल है कि तीनों का लेखनकाल पिछली शताब्दी रही है, इसके बावजूद उनका लेखन पीछा नहीं छोड़ता। राही मासूम रजा के यहां तो एक ऐसा हाशिया है, जहां बहुत तेजी से बदलाव हो रहा है और वह बदलाव शेखों–पठानों को आसानी से पच नहीं रहा है। सिफत यह है कि उनके पांवों के नीचे की जमीन खिसक चुकी है और वे सिवा हाथ मलने के कुछ और कर भी नहीं सकते। कुछ वर्ष और पीछे का मामला होता तो वे रुपए–पैसे से मजबूत होते जा रहे इन जुलाहों पर लट्ठ बजा देते लेकिन लाहौलबिलाकूवत। अब जमाना दूसरा आ गया है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आधा गांव' के दो दृश्य इस बदलाव को बहुत मार्मिक तरीके से व्यक्त करते हैं। जुलाहे अपनी मेहनत से तरक्की कर गए हैं और कल तक उनको अपने अर्दब में रखनेवाले शियाओं की आर्थिक और सामाजिक हैसियत दो कौड़ी की हुई जाती है। उनमें जुलाहों की लड़कियों को अब छेड़ न सकने की कसक है तो

दूसरी में एक शिया साहब जूते की दुकान खोले बैठे हैं। बड़ी मुश्किल से नए हीले का ठिकाना हुआ है इसलिए कुशलता से दुकान चलाने के सिद्धांत पर चल रहे हैं। एक दिन अपने ही कुनबे के एक सज्जन को जूते की ओर आता देख उनका खून सूखा जाता है कि कहीं मियां उधार न मांग लें। न जाने कब तक चुकाएंगे या चुकाएंगे ही नहीं। यह दिन किन दिनों को रौंदते हुये आया है इसे इस तथ्य से जाना जा सकता है कि लठैत भोला अहीर भी उनके तख्त पर नहीं बैठता। वह उस मचिया पर बैठता जो उसी के नाम से बैठक के एक कोने में रहती है। इसके साथ ही एक शेख साहब एक दलित महिला को रखे हुए हैं। वह उनके कई बच्चों की मां हो चुकी है और एक दिन निकाह के लिए कहती है तो वे उसे जूते–जूते पीटते हैं कि साली तेरी यह हिम्मत। लेकिन अब दृश्य बदल गया है। अंसारी जुलाहे पत्थर पर दूब की तरह उग आए हैं। अब उन्हें दबाना असंभव है। लेकिन दो समुदायों के बीच के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक फर्क को बहुत बारीकी से बुननेवाले राही साहब भी अंसारियों के कथाकार नहीं हैं। वे वस्तुतः शियाओं और पठानों के पतन के किस्सागो हैं। लिहाजा उनकी कथाभूमि गाजीपुर में पाकिस्तान के अलीगढ़ में जाने का चर्चा तो है लेकिन एकदम पड़ोस के जुलाहों पर बंटवारे का क्या असर होनेवाला है, इसका रत्ती भर भी जिक्र नहीं है।

नासिरा शर्मा की दृष्टि में लोग धर्म को एक हथियार के रूप में मानते हैं, जबकि सबको चलाने और जीवित रखने वाली शक्ति एक ही है, इसलिए वह कहती है कि – ''धर्म केवल योजनाबद्ध तरीके से जीवन जीने का एक रास्ता है। आज धर्म को समझना हमारे लिए बेहद जरूरी हो जाता है, क्योंकि इसका गलत प्रयोग इन्सानों के जिन्दगी को बेहद दुश्वार बना रहा है।'' नासिरा शर्मा किसी सांसारिक सीमा, बंधन या नियम को नही मानती, इनके अनुसार धर्म का सीधा संबंध हदय और भावना से है, इसके लिए बाहरी दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है। आपकी दृष्टि में संसार का सबसे बड़ा और सच्चा धर्म मानवता है, वही मानव को बुराईयों से बचाकर पवित्र जीवन जीने में सहायता प्रदान करता है, तभी वह कहती है कि–''मैं अपने विचार और सोंच में अपना धर्म, ईमान और इन्सानियत को मानती हूँ।'' धर्म एक पवित्र भावना है, जो कभी भी एक इंसान को दूसरे इंसान से अलग नहीं करता। इन्ही स्वच्छन्द विचारों के बल पर आप सांसारिक बाधाओं के होते हुए

भी समाज को एक नयी दिशा प्रदान करती है।

अतः इसी बात से प्रेरित होकर मैंने पीएच्ड्डीघ अनुसंधान हेतु **''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन''** यह विषय निश्चित किया है। अनुसंधान विषय को अध्ययन की सुविधा के लिए छः अध्यायों में विभाजित किया गया हैं, जिनका संक्षिप्त विवेचन निम्नाकिंत हैं।

प्रथम अध्याय 'नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व में उनके जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन किया गया है। जिसमें नासिरा शर्मा जी का जन्म, परिवार, बचपन, शिक्षा–दीक्षा, विवाह, दांपत्य जीवन, नौकरी, आदि पर प्रकाश डाला गया। तो कृतित्व के अंतर्गत नासिरा शर्मा जी के कुल 'बारह' कहानी संग्रह के नाम बताकर उनके भीतर समाविष्ट कहानियों के शिर्षक के माध्यम से उनका परिचय दिया गया है। नासिरा शर्मा के द्वारा प्रकाशित 'ग्यारह' उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं। इसके अतिरिक्त नासिरा शर्मा जी ने रिपोर्ताज, नाटक, बालकथाएँ, लेख, आलोचना आदि गद्य विधाओं की रचना की हैं और टीव्ही सीरियल के लिए कथा, पटकथा, संवाद लेखन का कार्य किया है। पत्रिकाओं के संपादन का भी कार्य किया हैं। जिसका शीर्षकों के माध्यम से परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय 'नासिरा शर्मा के उपन्यासों में **उद्घाटित विविध पक्षों के द्वारा** नारी समस्या, समुदाय, जल संकट, पर्यावरण, धार्मिकता, समाजिकता, सांस्कृतिकता, आर्थिकता, राजनीति एवं राजनैतिकता तथा साम्प्रदायिक भावना एवं एकता आदि समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज पर पड़ते प्रभाव को विभाजन, सांप्रदायिकता, आंतकवाद, नौकरशाही आदि उपमुद्दों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

तृतीय अध्याय नासिरा शर्मा की कहानियों में **उद्घाटित विविध पक्षों के द्वारा** नारी समस्या, समुदाय, जल संकट, पर्यावरण, धार्मिकता, समाजिकता, सांस्कृतिकता, आर्थिकता, राजनीति एवं राजनैतिकता तथा साम्प्रदायिक भावना एवं एकता आदि समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज पर पड़ते प्रभाव को विभाजन, सांप्रदायिकता, आंतकवाद, नौकरशाही आदि उपमुद्दों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं। धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं

में सांप्रदायिकता, रुढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास आदि उपमुद्दों को नासिरा जी के कहानियों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया हैं।

चतुर्थ अध्याय में **नासिरा शर्मा के अन्य विधाओं में उद्घाटित विविध पक्ष से सम्बन्धित** नारी समस्या, सामाजिकता, सांस्कृतिकता तथा धार्मिकता के माध्यम से स्पष्ट किया गया हैं।

पंचम अध्याय 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य की भाषा–शैली' में भाषा के महत्व को बताकर कथा साहित्य में प्रयुक्त शब्द भंडार, लोकोक्तियाँ, मुहावरों, कहावतों, उपमान, विशेषण, गालियाँ, काव्यात्मक भाषा आदि पर प्रकाश डालकर वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, चित्रात्मक, फ्लैश बैक, मनोविश्लेषनात्मक, पत्रात्मक, व्यंग्यात्मक, आदि शैलियों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

षष्ठ अध्याय 'नासिरा शर्मा का हिन्दी साहित्य में प्रदेय एवं साक्षात्कार से लेखिका के साहित्य में योगदान, स्वरूप एवं महत्व को बताते हुये विविध भूमिकाओं का वर्णन किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत उनकी उपलब्धियों एवं योगदान का वर्णन भी किया गया है।

अंत में 'उपसंहार' में सभी अध्यायों का सारांश प्रस्तुत किया गया है और पुरे अनुसंधान के दौरान आए अनुभव के आधार पर वर्तमान समाज की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए सकारात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध का निचोड़ प्रस्तुत करते हुये शोध की उपादेयता को स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबन्ध को पूर्ण रूप प्रदान करने के लिये अनुक्रमणिका के अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा सहायक ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ और पत्र–पत्रिकाओं का वर्णन किया है। जिनका उपयोग शोधकर्ता ने अपने शोध प्रबन्ध में सहायक के रूप में किया है।